विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

वर्ग-अष्टम्

विषय-हिन्दी

|| अध्ययन-सामग्री ||

बच्चों आज की कक्षा में वर्ण-विचार से संबंधित अन्य पृष्ठों की तस्वीर भेज रही हूं ताकि आज आप इसे पढ़ कर रखें और कल की कक्षा में इस पर चर्चा की जाय ।

'र' के साथ 'उ' और 'ऊ' की मात्रा, अन्य व्यंजनों की तरह नहीं लगती। ये इस प्रकार लगती है– र् + उ = रु (रूचि) और र् + ऊ = (रूप)।
सभी व्यंजन में 'स्वर' निहित होता है, परंतु मात्रा स्वर रहित व्यंजन के साथ लगती है।

व्यंजन Consonants

जिन ध्वनियों के उच्चारण में हवा कंठ से निकलकर मुँह में कहीं स्पर्श करते हुए या घर्षण करते हुए (रगड़ खाकर) बाहर निकलती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।

व्यंजनों का उच्चारण अकेले संभव नहीं होता। इनका उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है।

व्यंजन तीन प्रकार के होते हैं– **स्पर्श व्यंजन** **अंतस्थ व्यंजन** **ऊष्म व्यंजन**

1. **स्पर्श व्यंजन :** जिन व्यंजन के उच्चारण में वायु कंठ से निकलकर मुँह के किसी भाग का स्पर्श करते हुए बाहर निकलती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहा जाता है। स्पर्श व्यंजन इस प्रकार हैं–

वर्ग	स्पर्श व्यंजन	उच्चारण स्थान
कवर्ग	क ख ग घ ङ	(कंठ)
चवर्ग	च छ ज झ ञ	(तालु)
टवर्ग	ट ठ ड ढ ण	(मूर्धा)
तवर्ग	त थ द ध न	(दंत)
पवर्ग	प फ ब भ म	(ओष्ठ/ओठ)

2. **अंतस्थ व्यंजन:** जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु न तो मुँह में कहीं स्पर्श करते हुए, न ही रगड़ खाकर निकलती है, उन्हें अंतस्थ व्यंजन कहते हैं। जैसे– य, र, ल, व अंतस्थ व्यंजन हैं। इनमें से य तथा व को अर्धस्वर के रूप में माना जाता है। र, ल के उच्चारण में जीभ का अगला भाग दाँतों के पीछे थोड़ा–सा छूता है। हवा जीभ के दोनों पार्श्वों से निकलती है।

3. ऊष्म व्यंजन : इन व्यंजनों के उच्चारण में हवा किसी स्थान पर रगड़ खाकर बाहर निकलती हुई ऊष्मा उत्पन्न करती है। ऊष्म व्यंजन हैं– श, ष, स, ह।

अनुस्वार : अनुस्वार का शाब्दिक अर्थ है– स्वर के बाद आनेवाली नासिक्य ध्वनि। इसके बाद हमेशा कोई व्यंजन आता है। जिस व्यंजन से पहले यह आता है, उसी व्यंजन वर्ग के पंचम वर्ण (नासिक्य व्यंजन) के रूप में बोला जाता है। जैसे–

गंगा में गङ्गा पंछी में पञ्छी चंपक में चम्पक
ठंडा में ठण्डा अंत में अन्त

वस्तुतः अनुस्वार नासिक्य व्यंजन होता है, किंतु अं की मात्रा (–) के कारण इसे स्वरों में भी गिना जाता है। दूसरे यह अपने से पहलेवाले व्यंजन के स्वर के ऊपर लिखा जाता है।

अनुनासिकः अनुनासिक ध्वनियों के उच्चारण में हवा 'नाक' और मुँह दोनों से बाहर निकलती है। अनुनासिक स्वरों के लिए चंद्रबिंदु का चिह्न (ँ) प्रयोग किया जाता है। जिन स्वरों की मात्रा शिरोरेखा के ऊपर लगती है, उनमें ँ के स्थान पर बिंदु का प्रयोग किया जाता है। जैसे–

धाँस चाँदी, सिंचाई, भींचना, कुँवर, बूँद, सैंधव, चोंच, काँध, झेंप

विसर्गः विसर्ग का प्रयोग केवल तत्सम (संस्कृत) शब्दों में ही किया जाता है। हिंदी में विसर्ग का प्रयोग बहुत कम शब्दों में मिलता है। जैसे– प्रातः, अतः, प्रायः, संभवतः आदि। विसर्ग के उच्चारण में 'ह्' की ध्वनि निकलती है।

संयुक्त व्यंजन

हिंदी वर्णमाला में चार संयुक्त व्यंजन हैं– **क्ष, त्र, ज्ञ, श्र**। इन्हें **'संयुक्ताक्षर'** भी कहते हैं। ये संयुक्त व्यंजन नीचे दिए व्यंजनों के संयोग से बनते हैं। जैसे–

क्ष = क् + ष त्र = त् + र

ज्ञ = ज् + ञ (मानक हिंदी में ग् + य) श्र = श् + र

हिंदी में कुछ अन्य व्यंजनों का संयोग भी प्रचलित है। जैसे–

क् + य = क्य – क्यारी, वाक्य क् + र = क्र – वक्र, क्रम

क् + त = क्त – भक्त, रक्त र् + म = म – धर्म, कर्म

क् + ल = क्ल – क्लिष्ट, शक्ल क् + व = क्व – क्वार, पक्व

ऐसे संयुक्त व्यंजनों को **'संयुक्त वर्ण'** भी कहते हैं। समान व्यंजनों के गुच्छ को **द्वित्व व्यंजन** कहते हैं। जैसे– छक्का, सुग्गा, सच्चा, लज्जा, पट्टा, लड्डू, लट्टू, पत्ता, सत्ता, गद्दी, कद्दू, अन्न, समान, दिल्ली, अस्सी आदि।

इन्हें **समान व्यंजन गुच्छ** भी कहते हैं।

हिंदी में तीन व्यंजनों के गुच्छ भी प्रयोग में लाए जाते हैं। जैसे– उज्ज्वल, स्वास्थ्य, ज्योत्स्ना, मंत्र, महत्त्व, इंद्र, जितेन्द्र आदि।

हिंदी के विशेष व्यंजन

ड़ और **ढ़** विशेष व्यंजन ध्वनियाँ हैं। कोई भी शब्द इनसे आरंभ नहीं होता। उच्चारण में जीभ को ऊपर उठाकर आगे की ओर फेंका जाता है इसलिए इन्हें **उत्क्षिप्त व्यंजन** कहा जाता है।

ऑ (ॉ) अंग्रेजी से आई स्वर ध्वनि है। हॉल, डॉक्टर, कॉलेज आदि शब्दों में यह ध्वनि मिलती है। इसी प्रकार 'ज़' और 'फ़' भी अरबी–फारसी और अंग्रेजी के शब्दों में मिलते हैं। जैसे– ज़ालिम, फ़ौरन, ज़रूर, फ़िक्र, जज़्बात आदि। इन्हें **आगत ध्वनियाँ** भी कहा जाता है।

व्यंजन से व्यंजन का संयोग

स्वर सहित व्यंजन से स्वर रहित व्यंजन के मेल को संयुक्त व्यंजन कहते हैं।

व्यंजनों को साथ मिलाने के कुछ नियम हैं–

क. **खड़ी पाई हटाकर** – खड़ी पाईवाले व्यंजन जब किसी दूसरे व्यंजन के साथ मिलते हैं तो इनकी पाई हटा दी जाती है। ऐसे 22 व्यंजन है, ग, म, त, स आदि। जैसे–

ग् + य = ग्य (ग्यारह) स् + त = स्त (स्तुति)

म् + ल = म्ल (अम्ल) त् + म = त्म (आत्मा)

ख. **घुंडी हटाकर** – क और फ/फ जब अन्य व्यंजनों के साथ मिलते हैं तब इनकी घुंडी हटा दी जाती है। जैसे–

क् + त = क्त (रक्त) फ + त = फ्त (रफ्तार)

ग. **बिना पाईवाले व्यंजन** जैसे ट, ठ, ड, ढ, ह, द जब किसी व्यंजन के साथ मिलते हैं तब इनहें अ–रहित बनाने के लिए इनके नीचे हलंत (्) लगाया जाता है। जैसे–

ट् + ट = ट्ट (खट्टा) द् + व = द्व (द्वंद्व)

द् + ध = द्ध (शुद्ध) द् + भ = द्भ (अद्भुत)

ह् + व = ह्व (विह्वल) ह् + न = ह्न (चिह्न)

घ. **'र' के संयोग से बनानेवाले व्यंजन-गुच्छों के नियम इस प्रकार हैं–**

'र' के बाद कोई व्यंजन आए तो 'र्' अपने बाद आनेवाले वर्ण के ऊपर में लगता है। जैसे–

र् + म = र्म (धर्म) र् + ष = र्ष (वर्ष)

'र' से पूर्व कोई भी स्वर रहित व्यंजन हो तो 'र' उस व्यंजन वर्ण रेफ के रूप में लगता है। जैसे–

क् + र = क्र (क्रमिक) प् + र = प्र (प्रवीण)

'ट' और 'ड्' के बाद 'र' आने से उसका रूप इस प्रकार हो जाता है। जैसे–

'ट्' + र = ट्र (ट्रेन) ड् + र = ड्र (ड्रम)

वर्ण–विच्छेद

वर्ण-विच्छेद : शब्दों का वर्ण–विच्छेद करते समय व्यंजनों को अ–रहित रूप में और स्वर को अलग लिखा जाता है।

जैसे– काम = क् + आ + म् + अ सेब = स् + ए + ब् + अ

वर्ण–विच्छेद के सही ज्ञान से शब्दकोश में शब्द ढूँढ़ने और शुद्ध लिखने में आसानी होती है।